

डॉ. मनोरमा गौतम
दिल्ली

आँख का तारा

मिस्टर और मिसिज भारती का इकलौता बेटा था विकास। उसमें दोनों की जान बस्ती थी। मिसिज भारती का तो आँख का तारा था वो। बड़े बेटे की असमय मृत्यु के बाद वो दोनों बहुत डरे हुए थे इसलिए विकास के स्वास्थ को लेकर काफ़ी सतर्क रहते थे। मिस्टर और मिसिज भारती बिल्कुल फूल की तरह सींच रहें थे उसे। धूप , सर्दी , गर्मी , बरसात , सबसे बचाकर रखते थे। जरा सी भी उसकी तबियत ख़राब होती वो डॉक्टरों की लाइन लगा देते थे। धीरे - धीरे समय आगे बढ़ता जा रहा था और विकास भी समय के साथ युवा हो रहा था। एक दिन अचानक से किसी बीमारी की वजह से मिस्टर भारती की मृत्यु हो जाती है। मिसिज भारती अकेली पड़ जाती हैं। बेटे को देख किसी तरह हिम्मत करती हैं। उन्हें लगता है बेटे के सहारे बाकी की जिंदगी काट लेंगी। लेकिन उनके नसीब में अभी और दुःख भोगना लिखा था। मिस्टर भारती सरकारी नौकरी पर थे उनकी मृत्यु के बाद नौकरी विकास को मिल जाती है। नौकरी मिलते ही विकास रंग दिखाना शुरू कर देता है। माँ की बात को अनसुना करना। उनकी तबियत दवाई आदि का ध्यान न रखना । यहाँ तक कि उन्हें घर के खर्चे के लिए भी पैसे नहीं देता था। ऑफिस से आकर यार दोस्तों के साथ पार्टी करना। कई - कई लड़कियों के साथ संबंध रखना। मिस्टर और मिसिज भारती ने समाज में अपनी जो इज्जत बनाई थी वो उन सबको ख़ाक में मिला रहा था। हद तो तब हो जाती है जब वो शादी करने के बाद अपनी पत्नी को लेकर अलग हो जाता है और मिसिज भारती को अकेला छोड़ किसी अन्य शहर में रहने चला जाता है। उसके बाद से न कभी वो मिसिज भारती से मिलने आता है और न ही कभी उनकी कोई ख़ोज - ख़बर ही लेता है। लेकिन उसकी नज़र उस घर पर जरूर रहती है जिसमें मिसिज भारती रहती हैं। एक दिन अचानक से विकास मिसिज भारती से मिलने आता है उनके आगे ख़ूब रोता - धोता है , उनसे अपनी गलती की माफ़ी मांगता है फिर उन्हें अपने साथ लेकर चला जाता है। वहां लेजाकर धोखे से वो प्रॉपर्टी के कागज पर अंगूठा लगवा घर अपने नाम करवा लेता है । उसके बाद वो घर बेंचकर मिसिज भारती को दर - दर की ठोकर खाने के लिए छोड़ देता है। पंख कटे पक्षी के समान जिसका न कोई धरती न आसमान भटकते हुए मिसिज भारती मंदिर जा पहुंचती हैं...रोते हुए अपना आंचल फैला ईश्वर से कहती हैं - अगर ऐसे होते हैं आँख के तारे तो इससे अच्छा मैं अंधी ही रही होती...नालायक औलाद की माँ होने से अच्छा मैं बांझ ही रही होती। अपना माथा पटकते हुए वो भारी आवाज में कहती है - हे ! ईश्वर यदि किसी को औलाद दे तो लायक दे नहीं तो उसे बे - औलाद ही रहने दे ।